# दक्षिणी परिसर

राजीव गाँधी दक्षिणी परिसर, बरकछा, काशी हिन्दू विश्व विद्यालय द्वारा संचालित एक मानकीकृत शैक्षिक संस्था के रूप में (इजारा/पटटा में) भारत मण्डल ट्रस्ट द्वारा १ अप्रैल १९७९ में स्वीकृत किए गए ११०४ हेक्टेअर भूखण्ड में विस्तारित है। यह मिर्जापुर शहर से लगभग ८ किमी० दक्षिण पश्चिम राबर्टसगंज राजमार्ग पर स्थित है। भू-आकृतिक एवं पर्यावरणीय दृष्टिकोण से यह समग्र विन्ध्य परिक्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है जो कि मध्य प्रदेश, बिहार एवं छत्तीसगढ़ प्रांत के निकटवर्ती है। रा०गॉ०द०प०, शिक्षा के एक केन्द्र के रूप में विकसित किया जा रहा है जहाँ पर सुदूर क्षेत्र के जनजाति और वंचित वर्ग विशेषतया युवाओं और महिलाओं के प्रशिक्षण और उद्यमिता पर विशेष बल दिया जा रहा है। परिसर विद्यार्थियों के समग्र प्रगति को केन्द्र में रखते हुए उनके हृदय और मस्तिष्क का विकास, शैक्षिक, सांस्कृतिक, भौतिक एवं सामाजिक आवश्यकताओं के लिए एक ऐसे वातावरण कि स्थपना करता है जो कि विद्यार्थियों के मन एवं शरीर को समृद्ध बनाने में सहायक है। यहा के सभी संकाय सदस्य पूर्ण रूप से गुणवत्ता युक्त शिक्षा को अपने कौशल एवं ज्ञान से प्रदान करने के प्रति संकल्पित है। परिसर न केवल उच्च शैक्षिक परिणामों को देने के लिए प्रयत्नशील है बल्कि सफल एवं उच्च पेशेवरों का निर्माण करता है तथा ग्रामीण अंचल के लोगो के उत्थान हेतु प्रयत्नशील है।

**परिसर में कार्यरत संस्थानों/संकायों/विभागों का एक संक्षिप्त विवरण**

एम०बी०ए० (एग्रीबिजनेस), प्रबन्ध संकाय, रा०गॉ०द०प० ने एग्री बिजनेस एवं ग्रामीण विकास समस्याओं एवंम चुनौतियों पर ५ नवम्बर २०११ को पंडित मदन मोहन मालवीय जी की १५० वीं वर्षगाठ पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। इस अवसर पर ''एग्रीबिजनेस एवंम ग्रामीण विकास'' शीर्षक एक पुस्तक आई०एस०बी०एन० संख्या. ९७८-९३-८१५६४-०-२-८ का विमोचन। संकाय द्वारा विद्यार्थियों के लिए मुख्य परिसर में विशिष्टीकृत छःदिवसीय कुल चार प्रशिक्षण कार्यक्रम सत्र २०११-१२ में आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम आमीटि विश्वविद्यालय द्वारा अनुशंसित भी किया गया।

सत्र २०११-१२ में एम०बी०ए० संकाय सदस्यों द्वारा ४४ ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण एवं ४५ लघु शोध प्रबन्ध निर्देशित किये गये। एम०बी०ए० एग्रीबिजनेस के लगभग ९० प्रतिशत विद्यार्थियों का सम्मानित पब्लिक सेक्टर एवंम निजी संस्थानों में औसतन ४.५ लाख प्रति वर्ष वेतन पर चयन हुआ।

पादप जैव प्रौद्योगिकी कोर्स में प्रयोगशाला स्थापना कि प्रक्रिया जून २०११ से प्रारम्भ हुई। एक सुसज्जित प्रयोगशाला ऊतक संवर्धन भवन में बनाने की योजना है जिसके निर्माण हेतु धनराशि का आवंटन कर दिया गया है जो कि प्रायोगिक कक्षाओं के संचालन हेतु नितान्त आवश्यक है। प्रथम चरण में विक्रय किये गये उपकरणों का नाम क्रमशः हारिजेन्टल इलेक्ट्रोफोरिसिस यूनिट, वर्टिकल इलेक्ट्रोफोरिसिस यूनिट, रेफ्रीजेटर, मिनी स्पिन, रेफ्रीजेटर, माइक्रोसेन्टी फ्यूज, मास

फेलेकिंग, मशीन वाटर बाथ, वोटक्स आदि है। अग्रिम चरण में प्रगतिशील उपकरण के विक्रय हेतु आदेश निर्गत हो चुका है जिसके नाम क्रमशः लेमिनार एयर फ्लो, पी०सी०आर० उपकरण, जल डाकूमेटेंशन सिस्टम, आरबिटल शेकिंग इनक्यूटेर, डिप फ्रीजर, फ्लोर सेन्टीफ्यूज, इनर्वटेड मइक्रोस्कोप, यू०वी० विजबुल स्फक्ट्रो फोटोमीटर, वेईग बैलेंस, जेल ब्लाटिंग उपकरण आदि है। इसके अतिरिक्त उपभोज्य के लिए धन का आवांटन किया और कुछ उपभोज्य का क्रय भी किया जा चुका है। पहली बार विद्यार्थियों ने परिसर चयन प्रक्रिया में भाग लिया। इसमें दो विद्यार्थियों का चयन भी हुआ। विद्यार्थियों ने रा०गॉ०द०प० द्वारा आयोजित विभिन्न पाठ्येतर सहभागी क्रिया-कलापों में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया एवं इसमें विभिन्न पुरस्कारों को प्राप्त किया। पादप जैव प्रौद्योगिकी हेतु आवश्यक पुस्तकों का क्रय ग्रन्थालय द्वारा किया गया।

डिप्लोमा इन ऑफिस मैनेजमेंट एवं डिप्लोमा इन टुरिज्म मैनेजमेन्ट द्वारा चौदह दिवसीय कार्यशाला दिनांक ६ से २१ जनवरी, २०१२ सत्र में आयोजित किया गया, जिसका शीर्षक ''ऐन इम्प्लायमेन्ट जेनरेशन एण्ड एम्प्लायमेन्ट अपारचुनिटी'' था।

शिक्षा संकाय रा०गॉ०द०प० द्वारा दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन दिनांक २८ से २९ फरवरी, २०१२ को आयोजित किया गया जिसका शीर्षक ''फैक्टर्स अफेक्टिंग टीचिंग एण्ड रिसर्च स्ट्रेटजी टु इम्प्रुव क्वालिटी इन हायर एजुकेशन'' था। इस अवसर पर चार पुस्तकों का आई०एस०बी०एन० संख्या के साथ विमोचन किया गया। जिनका नाम क्रमशः ''क्वालिटी टीचर एजुकेशन इन इंडिया'', ''एग्रीकल्चर रिसर्च एण्ड सस्टेनेबल डेवलपमेन्ट इन इण्डिया'', ''डिसप्लीनरी एप्रोच इन टुरिज्म एनवायरमेंट आयुर्वेदा एवं योगा'' तथा ''रीसेन्ट ट्रेन्डस इन कामर्स एण्ड मैनेजमेन्ट'' था।

आयुर्वेद संकाय द्वारा एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी दिनांक २६ मार्च २०१२ को आयोजित किया गया जिसका शीर्षक ''नेशनल सेमिनार आन रिसेन्ट एडवान्सेज एण्ड फ्यूचरचैलेन्जेस इन आयुर्वेदा'' था।

पी०जी० डिप्लोमा इन रिमोट सेंसिग एण्ड जी०आई०एस० कोर्स में प्रयोगशाला की स्थापना फरवरी २०१२ में पूर्ण हुआ एवं द्वितीय सेमेस्टर की प्रायोगिक कक्षाओं को रा०गॉ०द०प० में ही करावाया गया। इस कोर्स के सभी १६ छात्रों को सत्र २०११-१२ में दिल्ली की विभिन्न प्रतिष्ठित कम्पनियों ने चयनियत किया।

**प्रमुख कार्यक्रम**

१. माननीय कुलपति महोदय ने पदग्रहण के उपरान्त रा०गॉ०द०प० परिसर के सकांय सदस्यों, गैर शैक्षणिक कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों को अक्टूँबर २०११ में सम्बोधित किया।
२. मालवीय जी के १५०वीं वर्षगॉठ पर ११ से १८ दिसम्बर , २०११ में श्री मद्भागवत परायण एवं भागवत कथा

का आयोजन किया गया।

३. मालवीय जी की १५०वीं वर्षगॉठ पर विभिन्न प्रतियोगी कार्यक्रमों का दिनांक २० से २५ दिसम्बर, २०११ में सफल आयोजन किया गया जिसमें रा०गॉ०द०प० एवं मिर्जापुर जनपद के विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के विद्यार्थियों ने प्रतियोगिता में भाग लिया।

४. माननीय कुलपति महोदय ने दिनांक १२ फरवरी, २०१२ को विन्ध्यवासिनी महिला छात्रावास में आगन्तुक कक्ष का उद्घाटन किया।

५. माननीय कुलपति महोदय ने दिनांक १२ फरवरी, २०१२ को तीन चेक डैम का शिलान्यास किया जिसका उपयोग जल संरक्षण, रवि एवं खरीफ फसलों की सिचाई एवं बीज उत्पादन हेतु किया जायेगा।

६. माननीय कुलपति महोदय ने दिनांक १२ फरवरी, २०१२ को रा०गॉ०द० परिसर, बरकछा में संकाय सदस्यों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों को ''मिस्ट्रि आफ अवर ओरिजिन'' पर अत्यन्त रोचक व्याख्यान दिया।

७. रा०गॉ०द०प० में ६३वें गणतन्त्र दिवस को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

८. रा०गॉ०द०प० के सभी प्रमुख भवनों को वाई-फाई नेटवर्क से जोड़ दिया गया है जो कि शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के शैक्षिक उत्थान हेतु लाभप्रद है। यद्यपि अभी भी इन्टरनेट की धीमी गति से सम्बन्धित समस्या विद्यमान है।

९. छात्रवासों द्वारा अपने स्तर पर विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। छात्रों के बीच पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र वितरित किये गये।

**कृषि विज्ञान केन्द्र**

कृषि विज्ञान केन्द्र, कृषक समुदाय के लिए विभिन्न प्रकार के कृषि क्रियाकलापों जैसे - प्रक्षेत्र परीक्षण, प्रथम पंक्ति प्रदर्शन, प्रशिक्षण, किसान मेला, किसान गोष्ठी, प्रसार कार्यक्रम, आदि का आयोजन करता है। कृषि विज्ञान केन्द्र कृषि की नवीनतम तकनीकों व उत्पादों का मूल्याकंन, परिष्कृतकरण और प्रदर्शन निम्न प्रकार करता है :-

१. प्रक्षेत्र विशेष हेतु कृषि तकनीकों को चिन्हित कर प्रक्षेत्र परीक्षण करना।
२. कृषक के खेत पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन द्वारा उत्पादन को संभावित करना।
३. कृषक/महिला कृषक/प्रसार कार्यकर्ताओं को नवीनतम तकनीकों का प्रशिक्षण प्रदान कर उन्हें आधुनिक कृषि तकनीकों द्वारा खेती करने हेतु प्रोत्साहित करना।
४. विषय विशेषज्ञ एवं ज्ञान केन्द्र के रूप में कृषक समुदाय, निजी एवं स्वयंसेवी क्षेत्रों को आधुनिक कृषि तकनीकी प्रदान कर जनपद की कृषि आर्थिक दशा सुधारने में सहयोग करना।
५. किसानों को उन्नतशील प्रजातियों के बीज एवं पौध सामग्री उपलब्ध कराना।

कृषि विज्ञान केन्द्र का लक्ष्य जनपद की स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप निर्धारित किया गया है जो इस प्रकार है :-

- शुष्क/बारानी क्षेत्रों में संसाधन संरक्षण तकनीक का समावेश।
- जनपद में दलहन/तिलहन फसलों की उत्पादकता वृद्धि पर बल।
- शुष्क/बारानी क्षेत्रों के लिए फलदार वृक्षों का समावेश।
- जनपद में सब्जियों की उन्नत तकनीक आधारित खेती पर बल।
- जैव उर्वरक, समन्वित कीट, रोग, खरपतवार प्रबन्धन एवं पोषक तत्व प्रबन्धन तकनीक अपनाये जाने पर बल।
- जनपद में उपलब्ध दुधारू एवं मांस वाले पशुओं की उत्पादकता में वृद्धि।
- कृषि यांत्रिकीकरण द्वारा कम श्रम से अधिकतम उत्पादन एवं कटाई उपरान्त प्रौद्योगिकी अपनाये जाने का प्रयास।
- ग्रामीण युवाओं/महिलाओं में व्यावसायिक/उद्यमिता का विकास ।

उपरोक्त समस्त कार्यक्रम निम्नानुसार सम्पादित किये जा रहे हैंः- प्रशिक्षण कार्यक्रम, नवीनतम उपलब्ध तकनीकी/प्रजातियों का परीक्षण, तकनीकी प्रदर्शनों/अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों का आयोजन, प्रसार कार्यक्रमों (गोष्ठी, मेला, प्रशिक्षण) का आयोजन, बीज एवं पौध उत्पादन तथा वितरण, मृदा एवं जल की जाँच, संसाधन एवं ज्ञान केन्द्र के रूप में कार्य करना, आदि। इन कार्यक्रमों के माध्यम से कृषि विज्ञान केन्द्र जनपद में कृषि के विकास हेतु लगातार प्रयासरत है। इसके अतिरिक्त मीडिया लैब एशिया के वित्तीय सहयोग एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के माध्यम से इस केन्द्र पर ग्रामीण ज्ञान केन्द्र की स्थापना की गयी है जिसमें किसानों के प्रशिक्षण के लिए अत्याधुनिक संचार माध्यमों का उपयोग किया जा रहा है।

**रा०गा०द०प०कृषि फार्म**

रा०गा०द०प०, कृषि फार्म वर्षा आधारित खेती के अंतर्गत कार्य कर रहा है तथा चेक डैम निर्माण करके सूक्ष्म सिंचाई की मदद से बहुत सी फसलो की खेती की जा रही है। बीज उत्पादन एवं फल की खेती हेतू १५० हे० भूमि विकसित की गयी है। विश्वविद्यालय ने तीन चेक डैम निर्माण हेतू ४२.०० लाख रूपये प्रदान किया है एवं निमार्ण कार्य प्रारम्भ हो चुका है। इस चेक डैम की मदद से २०१२-१३ में रवी की बुआई ६० हेक्टेअर अत्यधिक प्रक्षेत्र में होगी। वर्ष २००९-१० से बीज उत्पादन का कार्य काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के फसल प्रजनक एवं राष्ट्रीय बीज निगम, वाराणसी के सहयोग से व्यवस्थित रूप से किया जा रहा है । खरीफ की फसलों जैसे धान, तिल, मक्का, बाजरा, मूँग एवं ढैचा का शुद्ध बीज पैदा कर किसानों की सस्ते मूल्य पर रा०गा०द०प०, फार्म से विक्रय किया जा रहा है। २०११-१२ में गेहूँ, जौ, चना, सरसों एवं मसूर की ऐसी प्रजातियाँ जो यहाँ के वातावरण में अच्छी उपज दे सके की बिक्री की गई।

फार्म पर उपलब्ध संसाधन का समुचित उपयोग करते हुए खर्चों को ३० प्रतिशत कम किया गया है। रा०गा०द०प० का मुख्य उद्देश्य विध्याचल प्रक्षेत्र के शुद्ध बीज की आवश्यकता की पूर्ती, सिंचाई के साधनों का विकास एवं बीज विधायन संयत्र का निर्माण करना है।

वर्ष २०१०-११, में ७ हे० कृषि भूमि का विकास सिंचाई के फौब्वारा तकनीक से हुआ है। इस आदर्श तकनीक से कम पानी में पुरे वर्ष सघन खेती की जा सकती है। मूँग के प्रजनक बीज की कमी को देखते हुए कृषि विज्ञान संस्थान के वैज्ञानिक प्रजनक बीज के उत्पाद, बीज का प्रमाणीकरण एवं बिक्रय की व्यवस्था इस वर्ष भी प्रदान कर रहे हैं। मनरेगा परियोजना के अतंर्गत इस वर्ष भी बड़े पैमाने पर पौध रोपण का कार्य चल रहा है।

वर्ष २०११-१२ में छोटे स्तर पर डेयरी फार्म का विकास, शोध एवं दूध की उपलब्धता हेतु किया गया है।

**कार्यक्रम गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ**

- सत्र २०११-१२ में अर्न व्हाइल लर्न योजना (वर्तमान में ४१ छात्र कार्यरत है) परिसर में सुचारू रूप से संचालित की जा रही है।
- कृषि विज्ञान संस्थान द्वारा आयोजित किसान मेले में रा०गॉ०द०प० स्टाल ने प्रथम पुरस्कार अर्जित किया।

- बासमती चावल की उन्नति प्रजाति एच०यू०बी०आर० १०-९ को विशेष कार्याधिकारी, रा०गॉ०द०प० प्रोफेसर रवि प्रताप सिंह और उनके सहयोगी कृषि वैज्ञानिकों ने विकसित किया। जो सेन्ट्रल वैरायटल आइडेन्टिफिकेशन कमेटी ने ४७वीं एनुअल राइस मिटिंग, डी०आर०आर०, हैदराबाद में ७ अप्रैल, २०१२ को इस प्रजाति को चिन्हित एवं जारी किया।

## विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध अनुसंधान सुविधाओं का विवरण

रा०गॉ०द०प० में अनुसंधान गतिविधियों को मजबूत आधारशिला रखे जाने की आवश्यकता है विभिन्न पाठ्यक्रमों जैसे एम०बी०ए० एग्रीविजनेस, एम०सी०ए०, एम०एस०सी०(टेक) इन इनवायरमेन्टल साइंस एवं टेक्नोलॉजी, एम०एस०सी०(एजी०) एग्रो फारेस्ट्री, एम०एस०सी० (एजी०) स्वायल एवं वाटर कन्जरवेशन, एम०एस०सी० इन प्लान्ट बायोटेक्नालाजी में ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण, लघु शोध एवं शोध प्रबन्ध के लिये संगणक प्रयोगशाला और रासायनिक प्रयोगशाला की सुविधा कुछ सीमा तक प्रदान की जा रही है।

## विश्वविद्यालय द्वारा रा०गॉ०द०प० में स्वीकृत नये पाठ्यक्रमों का विवरण

- सत्र २०११-१२ में आयुर्वेद संकाय में रा०गॉ०द०प० में एम०फार्मा (आयुर्वेद) पाठ्यक्रमों की शुरूआत की गयी जिसमें विद्यार्थियों की कुल संख्या १५ है।
- सत्र २०११-१२ में एम०बी०ए० (एग्रीविजनेस) विषय में पाठ्यक्रम को पुनः संशोधित करके संगठित व्यवसायिक समूह के माँग एवं पूर्ति के अनुरूप नियोजित किया गया है।
- बी०एस०सी० (कृषि) पाठ्यक्रम सत्र २०१२-१३ में प्रारम्भ करने की योजना है।
- पशु चिकित्सा विज्ञान संस्थान के अन्तर्गत १८ नये विभागों के संचालन के लिए आगामी २०१२-१३ के लिए विश्वविद्यालय द्वारा अनुमति प्रदान की गयी है।
- परिसर में एक केन्द्रीय प्राथमिक विद्यालय स्थापित करने की प्रक्रिया चल रही है।

## अनुस्थापन सेवा प्रशिक्षण का कार्यक्रम

परिसर में एक अनुस्थापन समिति का गठन किया गया है जो कि विद्यार्थियों को सत्र के दौरान प्रशिक्षण एवं नियुक्ति हेतु आवश्यक अवसरों को उपलब्ध कराती है। यह समिति मुख्य परिसर के अनुस्थापन समिति से सक्रिय रूप से समन्वय बनाये रखती है।

## पाठ्येतर क्रियाएँ/गतिविधियाँ

इस सत्र में शैक्षिक कार्यक्रमों के साथ-साथ विभिन्न कार्यक्रमों, गतिविधियों का आयोजन किया गया।

पं० महामना मदन मोहन मालवीय जी की १५०वी० वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में पाँच दिवसीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिनमे भारतीय सांस्कृतिक नृत्य, लोकगीत, प्रहसन, हिन्दी, संस्कृत एवं आँग्ल भाषा में वाद-विवाद प्रतियोगिता, नाटक एवं तत्काल चित्रकला प्रतियोगिता आदि थी। स्पंदन २०११-१२ में रा०गा०द०प० के विद्यार्थियों ने तीन पुरस्कार अर्जित किया। विन्ध्याचल एवं शिवालिक छात्रावास में छात्रों के स्वस्थ्य मनोमस्तिष्क के विकास हेतु आंतरिक एवं बाह्य खेल कूद का सफल आयोजन किया गया। राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत विभिन्न शिविरों का आयोजन किया गया जो कि तात्कालिक सामाजिक मुद्दों से सम्बन्धित था।

## परिसर के नव निर्मित एवं योजनागत भवनों का संक्षिप्त रूप रेखा

सत्र २०११-१२ रा०गा०द०प० की परिधि में निम्न विकास/ निर्माण कार्य पूर्ण एवं प्रारम्भ किए गये।

१. खेल-कूद परिसर एवं पवेलियन का निर्माण कार्य प्रगति पर है। जिसके अन्तर्गत ४००मी० का मानकीकृत पथ तैयार किया गया है।
२. विन्ध्यावासिनी महिला छात्रावास को जाने वाली सड़क तैयार हो चुकी है।
३. परिसर को जोड़ने वाली विभिन्न सड़कों का निर्माण कार्य प्रगति पर है।
४. शिक्षक आवास के पास बनने वाला गैरेज का कार्य प्रगति पर है।
५. जल शोधन संयत्र एवं पानी टंकी का निर्माण कार्य प्रगति पर है जिसके पूर्ण होने पर शुद्ध एवं सुरक्षित पीने योग्य जल की उपलब्धता परिसर में २४ घंटे हो जायेगी।
६. बीज भडारण एवं बीज संवर्धन सयंत्र का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है।

७. विन्ध्यावासिनी महिला छात्रावास में आगन्तुक कक्ष का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है।
८. सिंचाई एवं जल संरक्षण हेतु तीन चेक डैम की परिकल्पना एवं निर्माण कार्य इस सत्र में प्रारम्भ हो चुका है।
९. पादप जैव प्रौद्योगिकी तथा मृदा एवं जल सरक्षण विषय के विद्यार्थियों हेतु पादप जैव प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला तथा मृदा एवं जल सरक्षण प्रयोगशाला का निर्माण कार्य प्रगति पर है। इन प्रयोगशालाओं में उपकरण मंगाने एवं कार्यरत कराने के लिए ५० लाख का आवंटन किया गया है।
१०. लोवर खजुरी जल परियोजना का कार्य प्रगति पर है।